साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

श्री साजन जी के मुख के शब्द

सजनों सुनो :- मखट्टू पुत्रां दा महाराज जी ने हाल फ़रमाया है,
फिर ओ लिखत विच आया है, ओ लिखत विच आया है।

सजन श्री शहनशाह महाबीर जी के मुख के शब्द

मखट्टू पुत्र नहीं ओ प्यारा बेटा,
निकल जावे तो उस नूं निकलने देवो, फिर उसने आना है इस द्वारे बेटा।

श्री साजन जी के मुख के शब्द

सजनों सुनो :- उस परम पिता परमात्मा ने बग़ीचे की सफ़ाई करनी है छांगणां है और मुश्क हटानी है।

सजनों सुनो :- तीन प्रकार के पुत्र होते हैं उत्तम, मध्यम, मन्द अधम।

उत्तम :- उत्तम पुत्र पिता का आज्ञाकारी होता है।

मध्यम :- मध्यम पुत्र गिर गिर कर फिर खड़ा होता है।

मन्द अधम :- मन्द अधम पिता के वचनों के विरुद्ध चलता है।
उत्तम पुरुष महाराज जी को प्यारा है। इस लिये हमें चाहिए कि हम उत्तम सपुत्र बन के दिखाएं।

सजन श्री शहनशाह महाबीर जी के मुख के शब्द
विचार और अव विचार दो शब्द हैं, सजनों सुनो

विचार :- विचार महाराज जी के मुख की बाणी है और विचार ही सजनों जीत और फ़तह है। विचार ही कुदरती आई हुई है।

अव विचार :- अव विचार कुसंग के कारण मनुराज ने रची है।

सजनों सुनो :- जो बात किसी के साथ करो विचार कर करो और विचार से ही उत्तर दो।
जिस सजन ने विचार के साथ कुल दुनियाँ में और जनचर बनचर जड़ चेतन में एक प्रकाश समझ लिया उस सजन की फ़तह ही फ़तह।

श्री साजन जी के मुख के शब्द

सब सजनों को बुला कर बड़े प्रेम और प्रीति से पूछो कि उस ताकतवर पिता के चरणों में रहना चाहते हो कि निकलना चाहते हो ? उस पिता के चरणों में रहने से जो चाहोगे सो पाओगे। जो सजन, सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचनों की पालना करते हुए नाम ध्यान और निष्काम रास्ते को पकड़ लेते हैं उस सजन के संकट दूर हो जाते हैं और उस की जीत जीत फ़तह फ़तह है। उस ताकतवर पिता के चरणों में सब कुछ मिल सकता है। विचार ही हमारी जीत और फ़तह फ़तह है।

सजनों अपने जन्म दा है अखण्ड पाठ, तिन वक्त तुसाँ रखना याद।
अपनी असलीयत दा पाओ प्रकाश, तिन वक्त तुसाँ रखना याद।।

सजनों सुनो :- अगर संसारी पुत्र मखट्टू हो जावे, तो उस पिता को कितना क्रोध आता है और अगर वह निकल जावे तो पिता को दुगना क्रोध आता है। इसी तरह परमार्थी पिता सजन श्री शहनशाह हनुमान जी ओ दाता ओ ताकतवर जिन से मौत भी कांपती है उस पिता का पुत्र मखट्टू हो जावे या निकल जावे तो उस पिता को सजनों कितना कोप होगा। क्योंकि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी नाम का दाम लेते हैं और प्रसन्न होते हैं।

सजनों सुनो :- सुदामा सजन श्री कृष्ण जी का मित्र था, वचनों की पालना न करने के कारण उसने भीख मांगी फिर सजन श्री कृष्ण जी के पास उसे आना पड़ा, इसी तरह मर्दाने ने भी सजन श्री गुरु नानक जी के वचन न पाले। फिर उस को भी उन के पास आना पड़ा और उस ने उन से सब कुछ पाया। स्वार्थ की तरफ़ से वह सुखी हो गये और परमार्थ की तरफ़ से प्रभु से मेल खा गये।

सजनों विचार ही फ़तह है

सजनों संकल्प प्रभु की तरफ़ हो जिस तरफ़ संकल्प उसी तरफ़ दृष्टि। एक दृष्टि ओ एक दर्शन, विचार नाल निकलना, सजनों को कहें कि विचार कर के निकलो। उस ताकतवर पिता के घर सब कुछ है, जो चाहो सो लवो मेरे सजनों, जिन सजनों को नाम की चाह होवे, वह अपने बच्चों को नाम दिलवाएं।

ताकतवर ताकतवर पिता दाता शहनशाह ओ ताकतवर
जो कुछ चाहवो सो लवो मेरे सजनों, सब कुछ है उन्हां दे घर
ओ है जे ताकतवर, ओ है जे ताकतवर

सजनों झुखना साडा रोना सी, संकल्प झुखता है इन्सान रोता है। संकल्प को ठीक कर लो। ख्याल आप का महाराज जी के साथ जुड़ जाए तो रोना मिट जायेगा। सत्संग से पूछें कि कौन रोना बन्द कर सकता है और कौन बन्द नहीं कर सकता, जो रोना बन्द कर सकते हैं वह अपना नाम लिख कर दें। जिन्होंने नाम लिख कर दिया है, अगर उसके बाद वह फिर रोयें तो वह जुर्माना दें। जो रोना बन्द नहीं कर सकते वह जुर्माना न दें, फिर भी वह सजन यत्न करें कि रोना मिट जाए। जब उन का रोना मिट जाए, तो वह अपना नाम न रोने वालों के साथ लिखा जाएं।